वर्ष 1 अंक 1 अक्टूबर 2022

इतिहास समाचार

Creative History Trust / रंगश्री की गतिविधियों का मुखपत्र

इतिहास समाचार ग्रामीण इतिहास, भारतीय ज्ञान की परंपरा, सामाजिक विकास, लोक स्मृति आदि के आकलन एवं संकलन-संयोजन के लिए कार्यरत Creative History Trust/ रंगश्री की गतिविधियों का मुखपत्र है जिसका प्रकाशन अपने सदस्यों और इतिहास में दिलचस्पी रखनेवाले देश-विदेश के बौद्धिकों के बीच निःशुल्क वितरण के लिए किया जाता है। यह ग्रामीण इतिहास, लोक स्मृति, भारतीय समाज, ज्ञान की परम्पराएं, संस्कृति और उपेक्षित इतिहास के उस पक्ष के दस्तावेजीकरण के लिए प्रतिबद्ध है, जिसे अमहत्त्वपूर्ण मानकर मुख्यधारा के चिंतकों द्वारा छोड़ दिया जाता है ।

सलाहकार समिति

डॉ. देवेंद्र चौबे, महेंद्र प्रसाद सिंह, डॉ. हितेंद्र पटेल, डॉ. दीपक कुमार राय, सुरेश कांटक

संपादक-मण्डल

डॉ. रश्मि चौधरी, डॉ. गणपत तेली, डॉ. उज्ज्वल आलोक, प्रदीप कुमार, प्रियंका कुमारी, संजय कुमार, डॉ. अजय कुमार यादव

विशेष परामर्श

नागेंद्र नाथ ओझा, अनिल कुमार गोयल, डॉ. बद्रीनारायण, डॉ. मणीन्द्र नाथ ठाकुर, फौजदार मांझी, डॉ. अखलाक आहन, डॉ. संजय कुमार, रमाकांत उपाध्याय, दिव्य विजय सिंह, डॉ. कुमार कौस्तुब, शशांक शेखर, लक्ष्मीकांत मुकुल, डा. नूरजहाँ मोमिन, हरिश्चंद्र शर्मा, देश निर्मोही, समदर्शी संजय, अनिल कुमार पाठक, अजय कुमार, डॉ. सीमा पटेल, शकील अंसारी, पंकज कुमार, वृजभूषण चौबे, डॉ. देविना अक्षयबर, डॉ. मधुलिका बेन पटेल, बिमल कुमार, सत्येंद्र कुमार चौबे, अखिलेश कुमार पाण्डेय, डॉ. गौतम चौबे

सह संपादक / कापी एडिटर

डॉ. आरती, डॉ. नीलम रानी, आशीष पाण्डेय, आमिर हमजा

विशेष सहयोग

डॉ. संतोष भारद्वाज, डॉ. जितेंद्र कुमार यादव, डॉ. खुशी पटनायक, राहुल शर्मा, श्याम जी चौबे

संपादन / संचालन / परामर्श / सहयोग पूर्णतः अवैतनिक और अव्यवसायिक

आगामी आयोजन

10वाँ सर्जनात्मक इतिहास वार्षिक सम्मलेन 2022

मेरा गाँव, मेरा इतिहास
My Village, My History

15वाँ कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान 2022
10वाँ रामायण चौबे स्मृति लोक व्याख्यान 2022
3रा कुमार नयन स्मृति ग्रामीण इतिहास व्याख्यान 2022

परिसंवाद, बातचीत, व्याख्यान एवं काव्य-पाठ
8 अक्टूबर, 2022, शनिवार, प्रातः11 बजे से
स्थान : जयहरीखाल, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड
आयोजक : Creative History Trust
रंगश्री, परम्परा / JNU Scholars Group & Buxar School of History

केरल के गाँव इतिहास, ज्ञान और संस्कृतियों के स्रोत हैं

9वाँ सर्जनात्मक इतिहास वार्षिक सम्मलेन 2021 ऑनलाइन सम्पन्न

कट्टनपल्ली : “केरल के गाँव भारतीय इतिहास, ज्ञान, सामाजिक गतिशीलता और अनेक संस्कृतियों के स्रोत हैं। वहाँ के गाँवों में प्राकृतिक संपदा, कृषि संस्कृति, समुद्री जीवन, श्रमिक एवं दलित आंदोलन, सामुदायिक इतिहास के अनेक स्रोत बिखरे पड़े हैं।” पिछले दिनों केरल के उत्तरी मालाबार के कट्टनपल्ली गाँव से 6-7 नवंबर, 2021 को ऑनलाइन आयोजित 9वाँ सर्जनात्मक इतिहास वार्षिक सम्मलेन 2021 में ये बातें उभरकर आई। कार्यक्रम का संयोजन किया केरल के प्रसिद्ध लेखक पी. रवि ने और केरल के लेखक-इतिहासकार जयचन्द्रन आर., सिन्धु. ए, महेश एस. और एस. आर. जयश्री ने परिसंवाद में भाग लिया। 14वाँ कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान दिया प्रसिद्ध पत्रकार अरुण कुमार त्रिपाठी ने और अध्यक्षता की इतिहासकार इशरत आलम ने। 9वाँ रामायण चौबे स्मृति लोक व्याख्यान इतिहासकार संजय कुमार ने दिया और अध्यक्षता की जर्मनी से भारतविद प्रो. रामप्रसाद भट्ट ने। दूसरा कुमार नयन स्मृति ग्रामीण इतिहास व्याख्यान दिया नूरजहां मोमिन ने और अध्यक्षता कवि लीलाधार मंडलोई ने की। लेखक देवेंद्र चौबे, आलोचक बजरंग बिहारी तिवारी, इतिहासकार हितेंद्र पटेल, मेहरज्योति सांगले, संजय स्वर्णकार, पत्रकार शशांक शेखर, आशीष पाण्डेय, संतोष कुमार भारद्वाज आदि ने विशेष वक्तव्य दिये। काव्य पाठ में भाग लेने वाले कवि थे : ए. जे. थॉमस, संतोष एलेक्स, सुरेश कांटक, प्रियदर्शन और खेमकरण सोमन।

औपनिवेशिक शासन के खिलाफ क्रांति के जनक थे मंगल पाण्डेय

8वाँ सर्जनात्मक इतिहास वार्षिक सम्मलेन 2020 ऑनलाइन सम्पन्न

नगवा, बलिया : “1857 का विद्रोह एक असाधारण विद्रोह था जिसमें औपनिवेशिक शासन के खिलाफ मंगल पाण्डेय ने क्रांति की लौ जलाई। यद्यपि यह विद्रोह असफल हो गया पर 1857 की क्रांति ने औपनिवेशिक और ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रतिरोध की जो चेतना विकसित की उसकी गूंज दूर तक गई।” ये बातें क्रिएटिव हिस्ट्री द्वारा 7-8 नवम्बर, 2020 को 1857 के शहीद मंगल पांडे के गाँव नगवा, बलिया से ऑनलाइन आयोजित कार्यक्रम में उभरकर आई। कार्यक्रम का संयोजन किया मंगल पाण्डेय की वर्तमान पीढ़ी के युवा अध्येता आशीष पांडे ने और परिसंवाद में भाग लिया चर्चित इतिहासकार-लेखक नागेन्द्र नाथ ओझा, जे एन सिन्हा, सुरेश मिश्र, विमल पाठक, घनश्याम पाण्डेय, अविनाश मिश्र, अतुल कुमार पांडे, रमिता गुरव, उल्फत मुहिबा, सुशील भाटी, माधुरी छेडा, उपुल रंजीत, शशांक शेखर आदि ने। 13वाँ कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान दिया प्रसिद्ध इतिहासकार एस एन आर रिजवी ने और अध्यक्षता की नेपाल से राजनीतिक विचारक अमरेश कुमार सिंह ने। 8वाँ रामायण चौबे स्मृति लोक व्याख्यान दिया जर्मनी से भारतविद रामप्रसाद भट्ट ने और अध्यक्षता की कथाकार प्रेम कुमार मणि ने। काव्य पाठ में भाग लेने वाले कवि थेः ए जे थॉमस, लीलाधर मंडलोई, कुमार नयन, राकेश रेणु, उपुल रंजीत, दुर्गतोष पांडेय, सुरेश कांटक, लक्ष्मीकांत मुकुल, अखलाक आहन, आशीष पांडेय, उज्ज्वल आलोक, मधुलिका बेन पटेल, लक्ष्मी जोशी, प्रदीप कुमार और आमिर हमजा।

इतिहास लेखन में जनता की हिस्सेदारी जरूरी है

7वाँ सर्जनात्मक इतिहास वार्षिक सम्मलेन 2019 सम्पन्न

जगदीशपुर, आरा : “इतिहास की कल्पना बिना लोक के संभव नहीं है। 1857 और सेनानी कुँवर सिंह का इतिहास जब भी लिखा जाएगा, उसमें जगदीशपुर के लोक समाज की बड़ी भूमिका होगी।” ये बातें 1857 के संघर्ष के केंद्र रहे जगदीशपुर में 16 नवंबर, 2019 को क्रिएटिव हिस्ट्री / रंगश्री द्वारा आयोजित परिसंवाद में उभरकर आई। कार्यक्रम में 12वाँ कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान दिया विज्ञान के प्रो. कन्हैया बहादुर सिन्हा ने; 7वाँ रामायण चौबे स्मृति लोक व्याख्यान दिया लोक इतिहासकार काबिरुद्दीन खान ने और अध्यक्षता की चर्चित लेखक देवेंद्र चौबे ने। इस अवसर पर हुए मेरा गाँव, मेरा इतिहास परिसंवाद में भाग लिया पूर्व सांसद नागेंद्र नाथ ओझा, कवि कुमार नयन, इतिहासकार सीमा पटेल, रश्मि चौधरी, लक्ष्मीकांत मुकुल, नीरज सिन्हा, विजय शंकर, नथुनी मालाकार, शाहबाज वारिस खान, अंगद सिंह, संदीप सिंह आदि ने। कार्यक्रम के स्थानीय संयोजक थे कुँवर सिंह की वर्तमान पीढ़ी के दिव्य विजय सिंह, सत्येंद्र प्रसाद सिंह और विजय शंकर सिंह।

क्रिएटिव हिस्ट्री प्रोफाइल

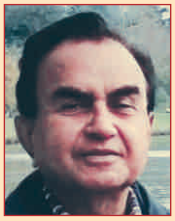

■ एस.एन.आर. रिजवी; प्रसिद्ध इतिहासकार और शिक्षाविद, इतिहास दृष्टि के संपादक ■ अनिल कुमार गोयल; वित्तीय मामलों के जानकार, सामाजिक कार्यों में दिलचस्पी ■ रामप्रसाद भट्ट; भारतविद, जर्मनी के हैम्बर्ग यूनिवर्सिटी में अध्यापन ■ जे.एन. सिन्हा; चर्चित इतिहासकार और शिक्षाविद ■ उल्फत मुहिबोवा; भारतविद, उज्बेकिस्तान के ताशकंद राज्य प्राच्य अध्ययन यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर

■ अजय कुमार; प्रसिद्ध पत्रकार और संपादक, प्रभात खबर ■ मिन्टू (जैनेंद्र कुमार पाण्डेय); सामाजिक कार्यकर्ता और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के बलिया के क्रांतिकारी नेता चित्तू पाण्डेय की वर्तमान पीढ़ी के सदस्य ■ संजय कुमार; इतिहासकार ■ पी. रवि; लेखक, संपादक और क्रिएटिव हिस्ट्री के केरल कार्यक्रम के संयोजक ■ सुशील भाटी; इतिहासकार, 1857 में गहरी दिलचस्पी, मेरठ के ऐतिहासिक गांवों की गहरी जानकारी

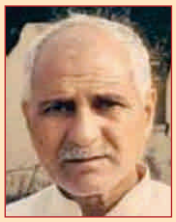

■ आशीष कुमार पाण्डेय; युवा अध्येता, 1857 के शहीद मंगल पाण्डेय के परिवार की वर्तमान पीढ़ी के सदस्य ■ विद्याशंकर चौबे; ग्रामीण और सांस्कृतिक इतिहास में गहरी दिलचस्पी, 2013 से रंगश्री / क्रिएटिव हिस्ट्री द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी ■ परवेज आलम; ग्रामीण इतिहासकार, 1764 के बक्सर-युद्ध के केंद्रीय गाँव कथकौली के निवासी ■ फौजदार मांझी; ग्रामीण इतिहासकार, पंचकोशी मेला के केन्द्रीय गाँव अहिरौली, बक्सर में निवास ■ बहादुर मांझी; पंचकोशी मेला के केन्द्रीय गाँव अहिरौली, बक्सर में निवास

■ देविना अक्षयबर; अध्येता, कहानीकार और संपादक, मॉरीशस की मूल निवासी ■ जितेंद्र कुमार यादव; युवा अध्येता, इतिहास में दिलचस्पी ■ मधुलिका बेन पटेल; कवि और आलोचक, इतिहास में दिलचस्पी ■ अजय कुमार यादव; युवा अध्येता, इतिहास में दिलचस्पी ■ सत्येंद्र कुमार चौबे; तकनीकी विशेषज्ञ, सामाजिक कार्यों में दिलचस्पी

■ कु. शशि; युवा अध्येता, इतिहास में दिलचस्पी ■ संजय कुमार; युवा अध्येता, इतिहास में दिलचस्पी ■ आरती; युवा अध्येता, इतिहास में दिलचस्पी ■ नीलम रानी; युवा अध्येता, इतिहास में दिलचस्पी ■ श्याम जी चौबे; ग्रामीण इतिहास में दिलचस्पी, 2010 से रंगश्री / क्रिएटिव हिस्ट्री द्वारा बक्सर क्षेत्र में आयोजित कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी

Creative History Trust की बैठक सम्पन्न

पिछले दिनों Creative History Trust की बैठक सम्पन्न हुई जिसमें ट्रस्ट की कार्यकारिणी, सलाहकार मण्डल, ग्रामीण इतिहास पर केंद्रित वार्षिक कार्यक्रम और प्रकाशन से संबंधित योजनाओं पर बातचीत हुई। यह भी तय हुआ कि ट्रस्ट की तरफ से 8 अक्टूबर, 2022 को उत्तराखंड के जयहरीखाल में ग्रामीण इतिहास पर एक कार्यक्रम और कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान, रामायण चौबे स्मृति लोक व्याख्यान, कुमार नयन स्मृति ग्रामीण इतिहास व्याख्यान आदि का भी आयोजन किया जाए। इसके लिए सतपुली, उत्तराखंड के इतिहासकार डा. संजय कुमार को स्थानीय संयोजक के रूप में नामित किया गया जिनकी मदद Creative History / रंगश्री से जुड़ी इतिहासकार रश्मि चौधरी, दीपक कुमार राय और रंगकर्मी महेंद्र प्रसाद सिंह करेंगे। यह भी तय किया गया कि पूर्व की तरह यह कार्यक्रम रंगश्री, परम्परा / JNU Scholars Group & Buxar School of History आदि संस्थाओं के सहयोग से किया जाएगा।

पहला कुमार नयन स्मृति ग्रामीण इतिहास व्याख्यान 2021 आयोजित

पिछले वर्ष अगस्त में प्रसिद्ध जनकवि, शायर और रंगश्री - क्रिएटिव हिस्ट्री से प्रारंभ से ही जुड़े बक्सर के कुमार नयन की स्मृति में ग्रामीण इतिहास व्याख्यान का आयोजन हुआ। व्याख्यान श्रीलंका के केलानिया यूनिवर्सिटी के प्रो. उपुल रंजीत ने दिया और अध्यक्षता की राज्यसभा के पूर्व सांसद नागेंद्र नाथ ओझा ने। वक्ताओं ने कहा कि "कुमार नयन का असमय गुजर जाना साहित्य की दुनिया और क्रिएटिव हिस्ट्री के लिए एक बड़ी क्षति है। वे 1764 के बक्सर-युद्ध के लिए मशहूर शहर बक्सर के जीवित इतिहास थे। ग्रामीण इतिहास लेखन की मुहिम के वे अग्रणी लोक इतिहासकार थे।"

इतिहासकार सुरेश मिश्र की स्मृति में संगोष्ठी

पिछले दिनों 18-19 जून, 2021 को इतिहासकार संजय स्वर्णकार के संयोजन में मध्य भारत इतिहास शोध संस्थान की तरफ से प्रसिद्ध इतिहासकार सुरेश मिश्र की स्मृति में एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें एस. एन. आर रिजवी, राधावल्लभ त्रिपाठी, विजय बहादुर सिंह, सलिल मिश्र, कुमार रत्नम, हितेंद्र पटेल, देवेंद्र चौबे, पुरन सहगल, रश्मि चौधरी, अशोक कुमार सिंह, संजय कुमार, अरुण वाघले, श्याम दुबे, अमिताभ अवस्थी, वीरेंद्र मिश्र, अनुराधा माथुर, दिव्या कुमार, विनय श्रीवास्तव ने भाग लेते हुए कहा कि सुरेश मिश्र भारतीय इतिहास की राष्ट्रवादी धारा के एक महत्वपूर्ण अध्येता थे।

ग्रामीण इतिहास से जुड़े बुद्धिजीवियों की स्मृति में छात्रवृत्ति की शुरुआत

पिछले दिनों Creative History से 2010 से जुड़े बक्सर क्षेत्र में सक्रिय कुछ सदस्यों और बुद्धिजीवियों में मोनाको देवी, कुमार नयन, तारा एम. चौबे और चंद्रदेव मिश्र हमारे बीच नहीं रहे। वे ग्रामीण इतिहास में दिलचस्पी रखनेवाले उन बुद्धिजीवियों में से थे जो ग्रामीण समाज और बक्सर के इतिहास को एक अलग नजरिए से देखते थे। ट्रस्ट शीघ्र ही उनकी स्मृति में ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए वार्षिक छात्रवृत्ति की शुरुआत करेगा।

ग्रामीण मेला : सोनपुर का मेला

बिहार में कार्तिक पूर्णिमा के दिन से तकरीबन एक माह चलने वाला, गंगा और गंडक नदी के संगम पर पशुओं का विश्वप्रसिद्ध विराट सोनपुर मेला (हरिहर क्षेत्र का मेला) आयोजित होता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यह स्थान 'गजेन्द्र मोक्ष' के रूप मे प्रसिद्ध है। कहते हैं यहाँ 'कोणहारा घाट' पर जब गज पानी पीने आया, तब ग्राह (मगरमच्छ) ने उसे अपने मुंह में जकड़ लिया और दोनों में युद्ध प्रारंभ हो गया। युद्ध में जब गज कमजोर पड़ने लगा, तब उसने हरि से गुहार लगाई। हरि ने अपना सुदर्शन चक्र चलाकर उनके युद्ध को खत्म कराया। तब से गज-ग्राह के युद्ध स्थल पर पशुओं का मेला लगने का प्रचलन प्रारंभ हुआ। यहाँ पर पशुओं का क्रय-विक्रय शुभ माना जाता है। यह एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला माना जाता है।

80 वर्ष के हुए प्रसिद्ध आलोचक मैनेजर पाण्डेय

पिछले वर्ष परम्परा / JNU Scholars Group, Creative History और रंगश्री की तरफ से 18-19 सितंबर 2021 को प्रो. मैनेजर पाण्डेय : एक दार्शनिक आलोचक विषयक एक अंतरराष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन हुआ जिसमें देश-विदेश के अनेक विद्वानों सहित साहित्य अकादेमी के सचिव के. एस. राव ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर आधार प्रकाशन द्वारा प्रकाशित और उन्हें समर्पित पुस्तक *हिंदी साहित्य का इतिहास : कुछ पाठ, कुछ विचार* का लोकार्पण भी प्रो. पाण्डेय ने किया।

जे.एन.यू. वीमेंस क्लब द्वारा अमृत महोत्सव पर कार्यक्रम

19 अगस्त 2022 को जे.एन.यू. वीमेंस क्लब द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव पर स्वाधीनता आंदोलन में स्त्रियों की भूमिका पर एक कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में जे.एन.यू. की कुलपति प्रो. शांतिश्री धूलीपुड़ी पंडित और सामाजिक कार्यकर्ता नयना सहस्त्रबुद्धे ने भाग लिया। कार्यक्रम का संयोजन क्लब की उपाध्यक्ष रश्मि चौबे, सचिव बबीता सिंह, संयुक्त सचिव गीता बजाज, कोषाध्यक्ष भावना दाभाड़े और सांस्कृतिक सचिव नीलम मुंडे ने किया।

इतिहास को संपूर्णता में देखे जाने के नजरिए की जरूरत

पिछले दिनों Creative History, रंगश्री, प्रतिश्रुति और Buxar Historian Group द्वारा आयोजित 'इतिहास क्या है / What is History?' विषयक वेबीनारों में यह बात उभरकर आई कि इतिहास को संपूर्णता में देखे जाने का नजरिया विकसित करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में शामिल इतिहासकारों और अध्येताओं में प्रमुख थे : दीपक कुमार, एस. एन. आर रिजवी, जे. एन. सिन्हा, मर्णीद्र नाथ ठाकुर, देवेंद्र चौबे, मेहरज्योति सांगले, सुचेता महाजन, रामप्रसाद भट्ट, उल्फत मुहिबोवा, प्रियदर्शन, रश्मि चौधरी, अंकित कुमार गुर्जर, नूरजहां मोमिन, प्रदीप कुमार आदि।

'पंचकोशी मेला' का लोकार्पण सम्पन्न

पिछले दिनों ग्रामीण इतिहास, भारतीय ज्ञान परम्परा और लोक दर्शन पर केंद्रित राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशित देवेंद्र चौबे की कृति *पंचकोशी मेला* का लोकार्पण अहिरौली, बक्सर के गंगातट पर हुआ जिसमें राज्यसभा के पूर्व सदस्य नागेंद्र नाथ ओझा, कथाकार सुरेश कांटक, अहिरौली मठ के आचार्य मधुसूदनाचार्य, लक्ष्मीकांत मुकुल, फौजदार मांझी, शशांक शेखर, नीरज पाठक, आशीष पाण्डेय, श्रीकृष्णा चौबे, विमल सिंह, छाया चौबे, बबन चौबे, यतीन्द्र चौबे, कृष्णा नन्द उपाध्याय, सुदर्शन पंडित, मधुसूदन चौबे, विद्याशंकर चौबे, पंकज कुमार, विमल कुमार, अखिलेश कुमार पाण्डेय, वैदेही शरण श्रीवास्तव, कुमार कौशिक, बृज भूषण चौबे, अमरेन्द्र कुमार, सत्येंद्र कुमार, श्याम जी चौबे सहित अनेक विद्वानों और ग्रामीण बुद्धिजीवियों ने भाग लिया। इस अवसर पर एनबीटी, दिल्ली और पटना की तरफ से सुदर्शन लाल के निर्देशन में एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया।

ग्रामीण इतिहास : कथकौली और परवेज आलम

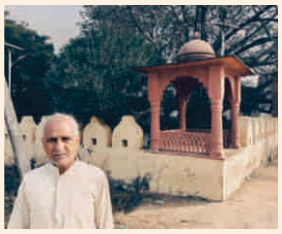

परवेज आलम 1764 के बक्सर युद्ध के लिए मशहूर गांव कथकौली के निवासी हैं। अपने पूर्वजों से वे युद्ध की कथाएं सुनते आए हैं - "मेरे अब्बाहुजूर कहते थे कि जब दोनों तरफ की सेनाएं लड़ रही थीं तब ये खेत सैनिकों के खून से लाल हो गए थे...!" खेतों की तरफ उंगुली दिखाते हुए वे कहते हैं - "यह मजार जो आप देख रहे हैं, ये इस गांव के दो योद्धाओं के हैं। उनके नाम हैं : सैयद अब्दुल गुलाम और अब्दुल कादिर राहमतुल्लाह। 1764 के युद्ध में ये बहादुरी के साथ लड़े और मारे गए। मीर कासिम, शाह आलम और शुजाउदौला की फौज समय पर नहीं पहुंची और ढाई घंटे के युद्ध में सभी भारतीय सिपाही मारे गए। उनका नाम इतिहास के किसी पन्ने में नहीं है। उनकी स्मृतियां आज भी यहां की हवा और मिट्टी में दफ्न है।" परवेज आलम लोक परम्परा के व्यक्ति हैं। खेती-बाड़ी करते हैं। उनका गांव छोटा है, पर गांव में दोनों योद्धाओं की स्मृति में बनी मजार, सामने करीब सौ मीटर की दूरी पर ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा अंग्रेज कप्तान हेक्टर मुनरो के बने हुए स्मारक को चुनौती देते नजर आते हैं।

संगोष्ठी : समकालीन भारत का ग्रामीण इतिहास लिख रहे थे रेणु

भारत, जर्मनी और उज्बेकिस्तान द्वारा फणीश्वर नाथ रेणु : पुनर्यात्रा आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय परिसंवाद में यह बात उभरकर आई कि "समकालीन भारत, लोक समाज और ग्रामीण इतिहास को समझने में रेणु की रचनाएं सबसे अधिक मदद करती हैं। रेणु अपनी भाषा और लेखन के जरिए उस ग्रामीण भारत को सामने लेकर आते हैं जो स्वाधीनता के बाद परम्परा और आधुनिकता से टकराते हुए शोषित एवं वंचित समाज का संवाद तथा संघर्ष रखता है।" कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवास राव, विनोद कुमार मिश्र, कथाकार प्रेमकुमार मणि, रेणु साहित्य के अध्येता भारत यायावर, रूसी विद्वान इंदिरा गाजिएवा, मारीशस से गुलशन सुखलाल, इतिहासकार बद्रीनारायण, पुर्तगाल से शिवकुमार सिंह, दीपक राय, पल्लवी प्रसाद, राजनीतिक समाजशास्त्री मणिद्र नाथ ठाकुर, इतिहासकार हितेंद्र पटेल, चीनी विद्वान ग फू फिंग, श्रीलंका के विद्वान उपुल रंजीत, आनंद वर्धन शर्मा, इतिहासकार रश्मि चौधरी, चीन की फू रांग, आशीष अग्निहोत्री, गणपत तेली, देविना अक्ष्यवर, प्रदीप कुमार, दिव्यराज अमिय, क्रिस्टन मिंटज, लक्ष्मी शर्मा, उज्बेकिस्तान से एस. हर्माटोवा गुलियारा एवं नीलोफर खोदजवेवा, रूस से एरिना शतोखिन्ना एवं एंटोनियो सोलोविव आदि ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम की शुरुआत में स्वागत वक्तव्य जर्मनी से प्रो. रामप्रसाद भट्ट एवं उज्बेकिस्तान से प्रो. उल्फत मुहीबोवा ने दिया और धन्यवाद ज्ञापन भारत से प्रो. देवेंद्र चौबे ने किया।

उपलब्धियां : जे.एन.यू. की महिला शक्ति की चर्चा

देश का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय जे.एन.यू. पिछले दिनों यहाँ की महिला शक्ति के कारण चर्चा में रहा। अंतर्राष्ट्रीय विषयों की विद्वान प्रो. शांतिश्री धूलिपुड़ी पंडित के रूप में जे. एन.यू. की प्रथम महिला कुलपति की नियुक्ति हुई। वहीं कंप्यूटर साइंस की अध्येता प्रो. सोना झरिया मिंज को, सिद्धू-कान्हू विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया। साहित्य के क्षेत्र में जे.एन.यू. अलुमनी गीतांजलि श्री के रोजी रोकवेल द्वारा अनुदित उपन्यास 'रेत समाधि' (Tomb of Sand) को साहित्य के प्रतिष्ठित पुरस्कार बुकर से सम्मानित किया गया।

हिंदी साहित्य का इतिहास : कुछ पाठ, कुछ विचार पर परिसंवाद

पिछले दिनों जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी की एलुमनी एसोसिएशन (AAJ) द्वारा हिंदी साहित्य का इतिहास : कुछ पाठ, कुछ विचार, खंड 1 पर परिसंवाद का आयोजन हुआ जिसमें राजनीतिशास्त्री मणीन्द्र नाथ ठाकुर, आलोचक ओमप्रकाश सिंह, इतिहासकार ज्योति अटवाल, फारसी के विद्वान अखलाक अहमद आहन, आलोचक बलवंत कौर सहित एलुमनी एसोसिएशन के अध्यक्ष राजेश कुमार राजन और सचिव स्वदेश सिंह ने भी अपने विचार रखे।

इतिहास के नायक : चाखि खुँटिया

चाखि खुँटिया (1827-1870) 1857 के पहले स्वाधीनता आंदोलन के एक बड़े नायक हैं। उन्हें पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर का पुजारी और कवि भी कहा जाता है। उनका संबंध झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के परिवार के साथ भी जोड़ा जाता है। कहा जाता है कि 1857 में उन्होंने एक पांडा के रूप में सम्पूर्ण भारत की यात्रा की, सिपाहियों को संगठित किया और ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ संघर्ष किया। उनके बारे में कहा जाता है कि 1858 में पकड़े जाने के बाद उन्होंने माफी मांग ली थी तथा रिहा होने के बाद एक आध्यात्मिक जीवन व्यतीत किया। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि 1857 के संग्राम में वे शहीद हो गए थे और उनकी पत्नी ने विधवा का जीवन बिताया। पर यह सच है कि उनके पास संगठन की अद्‌भुत क्षमता थी और पूर्वी भारत के विद्रोह को उससे ताकत मिली।

इतिहास : चौरी-चौरा हत्याकांड के सौ वर्ष

परतंत्र भारत में अहिंसात्मक असहयोग आंदोलन अपने चरम पर था। तभी चौरी-चौरा कांड की घटना घटी, जिसने पूरे क्रांतिकारी आंदोलन की दिशा बदलकर रख दी। चौरी-चौरा उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिला का एक गाँव है, जहां 4 फरवरी 1922 को भारतीय किसान आंदोलनकारियों ने ब्रिटिश सरकार की क्रूर हिंसक कार्रवाई के प्रति उत्तर में एक पुलिस स्टेशन में आग लगा दी थी। जिससे पुलिस थाने में छुपे हुए 22 पुलिसकर्मी जिंदा जल कर मर गए थे। यही घटना इतिहास के पन्नों में 'चौरी-चौरा हत्याकांड' के नाम से प्रसिद्ध है। इस कांड का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस हिंसक हत्याकांड से महात्मा गांधी बहुत ज्यादा आहत और परेशान हुए। फलस्वरूप उन्होंने असहयोग आंदोलन को वापस ले लिया। 2022 में सौ वर्ष पूरे होने पर भी देश के लोगों के मन में चौरी-चौरा हत्याकांड जीवित है। इतिहासकार शाहिद अमीन ने इस घटना पर शोधकार्य के साथ-साथ यादगार संस्मरण लिखे हैं।

किताबें

हिन्दी साहित्य का इतिहास : कुछ पाठ, कुछ विचार, खंड 1, संपादक : देवेन्द्र चौबे, अजय कुमार यादव, गणपत तेली; संपादन सहयोग : मधुलिका बेन पटेल, प्रदीप कुमार, संजय कुमार; आधार प्रकाशन, पंचकुला; 2021; The Rebel World of 1857: Eastern Uttar Pradesh, Syed Najmul Raza Rizvi, Kalpaz Publications, New Delhi, 2021; पंचकोशी मेला, देवेंद्र चौबे, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली, 2021; अनावरण, सुरेश कांटक, सर्व भाषा ट्रस्ट, दिल्ली, 2021; पाहन फोरी गंग एक निकरी, रामचंद्र ओझा, अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, 2019; Cultural Labour: Conceptualizing the 'Folk Performance' in India, Brahma Prakash, OUP, Delhi, 2019; आधुनिक भारत का ऐतिहासिक यथार्थ, हितेन्द्र पटेल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2022; ज्ञान की राजनीति, मणींद्र नाथ ठाकुर, सेतु प्रकाशन, नोएडा, 2022; नकटौरा, चित्रा मुद्‌गल, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, 2022; दस्तक 2, सं. नूपुर अशोक, देवेंद्र चौबे, रचित प्रकाशन, कोलकाता, 2022; यह, वह प्रदेश तो नहीं, सं. देवेंद्र चौबे, नूपुर अशोक, के एल पचौरी प्रकाशन, गजियाबाद, 2022

ग्रामीण इतिहास कार्यशाला

ग्रामीण इतिहास कार्यशाला का आयोजन प्रतिवर्ष किसी-न-किसी गाँव में किया जाता है। बक्सर क्षेत्र में होनेवाली इस कार्यशाला के संपर्क सूत्र हैं : डा. रश्मि चौधरी, डा. देवेंद्र चौबे, डा. दीपक कुमार राय, डा. शशांक शेखर, पंकज कुमार, डा. गणपत तेली, प्रदीप कुमार, प्रियंका कुमारी, संजय कुमार, कृष्णा नन्द चौबे, परवेज आलम और श्याम जी चौबे।

फोन : 8383842812, 9131433478 , एवं 9868967552
ई-मेल : creativehistorygroup@gmail.com

Creative History Trust / रंगश्री, नई दिल्ली के लिए रश्मि चौधरी और अखिलेश कुमार पाण्डेय द्वारा प्रकाशित और स्वाति कम्युनिकेशन द्वारा मुद्रित। मोबाइल : +91-9213132174

ग्रामीण इतिहासकार
अलुन हॉकिन्स

– प्रदीप कुमार, युवा अध्येता

ससेक्स विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर और 'रुरल हिस्ट्री' पत्रिका के सह-संस्थापक अलुन हॉकिन्स (1947-2018) एक समाजिक इतिहासकार थे जिनकी इंग्लैंड के ग्रामीण समाज के इतिहास में विशेषज्ञता थी। इनकी प्रसिद्धि ब्रिटेन के ग्रामीण इलाकों और उसके मजदूर वर्ग के एक प्रमुख इतिहासकार के रूप में है। हॉकिंस का जन्म बीसेस्टर, इंग्लैंड में एक मजदूर परिवार में हुआ था। इनके पिता कम्युनिस्ट पार्टी के समर्थक, द्वितीय विश्व युद्ध के सैनिक और मैकेनिक थे। अलुन हॉकिन्स स्कूली परीक्षाओं में अच्छा नहीं कर पाने और 15 साल की उम्र में कॉलेज से निकाल दिए जाने के बाद एक खेतिहर मजदूर के रूप में काम करने लगे। इसके डेढ़ साल बाद इन्होंने आयुध डिपो में नौकरी करना आरंभ किया। बाद में वे 'पोर्टमैन प्रेस' में 'कॉपी एडिटर' के रूप में काम करने लगे और ट्रेड यूनियन से जुड़ गए, जिसके कारण उन्हें 1966 में नौकरी से निकाल दिया गया। इसके बाद इन्होंने रस्किन कॉलेज में पढ़ाई के लिए दाखिला लेने से पहले 2 साल तक ऑक्सफोर्ड में 'ब्लैकवेल' के लिए काम किया। यहाँ से उनकी जिन्दगी ने एक नया मोड़ लिया। हॉकिंस ने यहाँ 2 साल बिताए और उसके बाद ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से इतिहास और अंग्रेजी विषयों के साथ स्नातक की डिग्री पूरी की। 1973 में यह डॉक्टरेट की पढ़ाई करने ससेक्स विश्वविद्यालय चले गए। इसके 3 साल बाद उन्होंने ससेक्स विश्वविद्यालय में पढ़ाना शुरू किया फिर वापस आकर पीएचडी की पढ़ाई शुरू की। ससेक्स द्वारा 1982 में "द ग्रेट मोमेंटस टाइम : रेडिकलिज्म एंड द नॉरफॉक फार्म लेबरर, 1872-1923" के लिए पीएचडी प्रदान की गई। ससेक्स विश्वविद्यालय में 2010 में सेवानिवृत्त होने से पहले तक वे इतिहास के प्रोफेसर रहे और उसके बाद उन्हें वहीं एमेरिटस प्रोफेसर नियुक्त किया गया।

विश्वविद्यालय के बाहर, हॉकिन्स 'रुरल हिस्ट्री' पत्रिका के सह-संस्थापक थे। ये 'हिस्ट्री वर्कशॉप जर्नल' के प्रथम अंक के संपादक भी रहे थे। इसके अलावा इन्होंने सन 1999 में बीबीसी के लिए ग्रामीण और कृषि जीवन पर आधारित टेलीविजन सीरियल भी लिखा और प्रस्तुत किया। यह महत्वपूर्ण है कि इन्हें इंग्लैंड के ग्रामीण समाज, खेतिहर मजदूरों, गांव के गरीब व्यक्तियों और ग्रामीण लोक कथाओं के अग्रणी इतिहासकार के रूप में देखा जाता है। इन्होंने 'पुअर लेवरिंग मैन : रुरल रेडिकलाइज्म इन नोरफोक; रीशेपिंग रुरल इंग्लैंड : अ सोशल हिस्ट्री; द डेथ ऑफ रुरल इंग्लैंड : हिस्ट्री ऑफ द कंट्री साइड सींस 1900; आदि महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी।

'अहिरौली, बक्सर में इतिहास समाचार' 2019 का लोकार्पण करते ग्रामीण जन

इतिहास समाचार में सर्जनात्मक इतिहास से संबंधित गतिविधियों, उपलब्धियों, और समाचारों आदि को प्रकाशनार्थ निम्नलिखित पते अथवा ई-मेल पर भेजा जा सकता है :

Creative History Trust / रंगश्री
- 34/1, फ्लैट: ई-1, डेसू रोड, महरौली, नई दिल्ली-110030
- 72, पॉकेट-4, सेक्टर-12, द्वारका, नयी दिल्ली-110078

creativehistorygroup@gmail.com; query@rangashree.in